5

बाशा

छोटों को बड़े बनाना

वचन पाठ: 1 राजाओं 15:33; 16:7

जीवन यात्रा की मुख्य बात जीवन के आरम्भ से अन्त तक उपयुक्त निर्णय लेना होता है। हम कह सकते हैं कि जीवन निर्णय लेने की एक लम्बी शृंखला है। इन पसन्दों को बड़े और छोटे निर्णय यानी, बड़ी और छोटी पसन्दें कहा जा सकता है।

बड़े फैसले पहले लिए जाते हैं और वे छोटे निर्णय बनने का काम करते हैं। कई लोग छोटे निर्णयों के बड़े निर्णयों को संभालने के आधार पर इसके उलट प्रक्रिया बनाने की कोशिश करेंगे। उदाहरण के लिए खाने-पीने के प्रतिदिन की छोटे से निर्णय की बात ही देख लें। जब कोई परमेश्वर की इच्छा से मेल खाते अपने जीवन के निर्णय लेता है, जो एक बड़ा फैसला है तो वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने खाने-पीने की आदतें बनाने का छोटा फैसला भी करता है। बड़ा फैसला छोटे फैसलों को प्रभावित करता और उन्हें बनने में अगुआई देता है, परन्तु यदि कोई अपनी लालसा और भूख को मिटाते मन जैसे मर्जी से खाता है, तो उसने अपने पेट को अपना ईश्वर बना लिया है। उसने छोटे फैसले को बड़ा फैसला लेने की अनुमति दी है। उसकी बड़ी पसन्दें छोटी-छोटी पसन्दों से संचालित होती हैं। यदि उसमें कुछ खराबी हो जाए जिसमें हमारे निर्णय लिए जाते हैं, यदि हम छोटों को बड़ा बना दें तो परमेश्वर के साथ रहने में हमें दिक्कत आएगी।

मैंने एक आदमी के बारे में पढ़ा है जो अपनी जीविका के लिए मूंगफली बेचा करता था। किसी बड़े नगर के बाजार के एक कोने में उसका एक छोटा-सा ठेला होता था। हर रोज सुबह से लेकर देर रात तक वह वहां से गुजरने वालों को मूंगफली बेचा करता था। सच तो यह है कि अपने इस काम से उसका अच्छा गुजारा हो जाता था। बुढ़ापे में किस्मत ने उससे मूंगफली का कारोबार छीन लिया। अब इस आदमी के बारे में विचार करें। मैं उसके बारे में अधिक नहीं जानता, परन्तु चलो मान लेते हैं कि जो कुछ मैंने उसके बारे में पढ़ा वही उसके विषय में कहा जा सकता था कि उसने गली के एक कोने में मूंगफली बेचते हुए अपनी जान दे दी। वह कभी मसीही नहीं बना। उसने कभी परमेश्वर की आराधना नहीं की, उसके परिवार में कोई मसीही नहीं था। यदि आप उससे पूछते कि वह मसीही क्यों नहीं बना या परमेश्वर के लिए क्यों नहीं जीया तो उसका उत्तर होता, ''मैं मूंगफली बेचने में व्यस्त था।'' हमें उसमें एक ऐसा आदमी मिलेगा जिसने जीवन के उद्देश्य को खो दिया, जिसने जीवन के छोटे फैसलों को बड़े फैसले मिटाने की अनुमति दी। परमेश्वर की सेवा करने की बड़ी पसन्द को उसके दिमाग में जीविका कमाने की छोटी पसन्द ने छिपा दिया था।

छोटे फैसलों पर ध्यान करके मूल्यों को उलटा कर देना इस्राएल के तीसरे राजा बाशा के

शासन से पता चलता है। उसने 909 से 886 ई.पू. तक शासन किया जब आसा यहूदा की गद्दी पर बैठा था (15:33)। इस्साकार के गोत्र से एकमात्र उत्तरी राजा बाशा ने तिर्सा को अपनी राजधानी बनाकर इस्राएल का दूसरा राजवंश आरम्भ कर दिया। गद्दी तक वह हत्या के द्वारा पहुंचा था। स्पष्टतया वह नादाब की सेना का सेनापति था, परन्तु उसके विरुद्ध विद्रोह करके उसे मार कर सिंहासन पर बैठ गया। राजा के रूप में उसका पहला कार्य यारोबाम के घराने का सर्वनाश करना था, जिससे उसने अहिय्याह की भविष्यवाणी पूरी की:

> राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उसने यारोबाम के वंश को यहां तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास शीलो वासी अहिय्याह से कहलवाया था (15:29)।

यह हत्याकांड बहुत भयानक था और बाद में परमेश्वर ने इसकी निन्दा की थी (16:7)। हां, यह भविष्यवाणी की गई थी कि ऐसा होगा और बाशा परमेश्वर के हाथ में इसे अन्जाम देने वाला हथियार था। तौ भी परमेश्वर ने बाशा को उसके किए के लिए, उसके ढंग के कारण ज़िम्मेदार ठहराया और इसके पीछे प्रेरणा उसके कार्यों की थी। उसके इस भविष्यवाणी को पूरा करने से हमें उस भेद का स्मरण आता है, जो ईश्वरीय भविष्यवाणी और इसके पूरा होने के गिर्द आमतौर पर पाया जाता है। यशायाह ने भविष्यवाणी की कि यीशु अधर्मियों के हाथों क्रूस पर चढ़ाया जाएगा (यशायाह 53:7-9), परन्तु अधर्मियों को अपने दुष्ट कृत्य के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया था (प्रेरितों 2:23)।

सिंहासन पर बाशा के चौबीस साल उसकी सराहना के लिए कुछ नहीं देते। उसने राजा बनने के लिए परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए वर्ष बर्बाद कर दिए। वह मनुष्यों का ही नहीं, मिले अवसर का भी हत्यारा था। उसके पास प्रभावित करने और आज्ञा देने के अधिकार की शक्ति थी। उसके पास उसके मार्ग को देखने के लिए हर आंख थी, परन्तु उसका जीवन परमेश्वर के वचन में एक असफलता में चला गया, क्योंकि उसने जीवन के बड़े निर्णय गलत लिए। उसने स्वार्थी इच्छाओं के कारण बिना मानवीय बुद्धि के काम करना चुना। जिसका परिणाम पथ भ्रष्ट जीवन यानी एक ऐसा जीवन हुआ जिस पर आनन्द नहीं, शोक ही किया जा सकता है।

उन बड़े निर्णयों को ध्यान से देखें जिन्हें लेने में बाशा असफल रहा। विचार करें कि इस असफलता ने उसके अपने ही जीवन को कैसे प्रभावित किया।

परमेश्वर के वचन के बारे में

पहला बड़ा निर्णय जो बाशा को लेना था, वह परमेश्वर की इच्छा के साथ व्यवहार था। उसके जीवन में पहले ऐसे समय आए होंगे जब उसके कार्यों और विचारों पर परमेश्वर के नबियों ने सवाल उठाए, परन्तु बाशा ने कई चेतावनियों या ताड़नाओं को नज़रअंदाज़ कर दिया। उसने सुना पर उन पर ध्यान नहीं दिया; उसने ध्यान दिया परन्तु उन्हें माना नहीं।

एक विशेष समय का उल्लेख है, शायद यह उसके जीवन के अन्त के निकट की बात है, जब उसे हनानी के पुत्र येहू नबी द्वारा डांटा गया था (16:1-7)। अपने संदेश में येहू ने निर्भयता

से भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर यारोबाम के घराने की तरह ही बाशा के घराने को भी काट डालेगा (16:3, 4)। उसने कहा कि बाशा के रिश्तेदार, नगर में और खेतों में फैंके जाएंगे और उनके शव दफ़नाए नहीं जाएंगे:

> बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खा डालेंगे, और उसका जो कोई मैदान में मर जाए, उसको आकाश के पक्षी खा डालेंगे (16:4)।

बाशा ने परमेश्वर के कामों को ठुकराया था और उसका वंश बना नहीं रहना था। वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि बाशा ने इस भविष्यवाणी को माना हो। हो सकता है कि उसका मन अन्य सभी भविष्यवाणियों के अन्य सभी संदेशों को सुनने की तरह इस भविष्यवाणी को सुनकर भी कठोर हो गया हो।

यदि बाशा अपने शासन के आरम्भ से लेकर अन्त तक परमेश्वर के वचन को मानता तो क्या होना था? परमेश्वर उसे आदर देता, और हम उसे पुराने नियम के महान लोगों में से एक के रूप में मानते हैं। परमेश्वर के वचन को मानने का बड़ा निर्णय लेने पर उसके अन्य सभी फैसले उस फैसले से शुद्ध और पवित्र किए जाते। उसका जीवन यहोवा की आराधना, उसकी इच्छा का प्रचार करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए समर्पित होता।

जीवन का आधार परमेश्वर के वचन को मानने का निर्णय लेना है, इसका अर्थ चाहे जो भी हो और यह चाहे जहां भी ले जाए। ऐसा फैसला केवल यह फैसला लेने वाले और उसके आस-पास के संसार के लिए ही लाभदायक नहीं होगा, बल्कि परमेश्वर के लिए जीना एक रोमांचकारी जीवन बना देगा! परमेश्वर की इच्छा को मानते हुए नबियों के जीवन कितने रोमांच से भरे थे! उन्होंने भलाई के लिए लोगों के जीवन बदलते देखे, पूरी कौम को परमेश्वर के निकट लेकर आए और एक जीवित विरासत छोड़ गए जो आज भी हमारे संसार को प्रभावित करती है। दूसरी ओर इस फैसले को नज़रअंदाज़ करना व्यक्ति को पाप के नगर में "आज्ञा न मानने वाली गली" में नीचे केवल मूर्खता के उसके साथी होने के लिए नीचे भेज देता है। उसका जीवन कठिनाइयों से भर जाता है, जो केवल परमेश्वर की इच्छा को मानने से ही दूर हो सकती है। बाशा ने या तो इस फैसले के महत्व को समझा नहीं या उसने इसे मानने से इनकार कर दिया।

परमेश्वर के मार्ग के बारे में

बाशा के लिए दूसरा बड़ा फैसला यारोबाम के धर्म के प्रबन्ध के विषय में लेना था। वह इसे बना रहने दे या इसे हटा दे? वह यारोबाम के मार्ग में चलता रहे या परमेश्वर के मार्ग में लौट आए? यह फैसला एक बड़ा फैसला होना था और इसके लिए परमेश्वर को समर्पित दिल और मन का होना आवश्यक था। इसके लिए गलत शिक्षा से कौम को परमेश्वर की ओर वापस लाने के लिए एक असाधारण व्यक्ति की आवश्यकता थी। क्या बाशा वह व्यक्ति होना था? नादाब को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं लगी। क्या बाशा को लगी?

बाशा का फैसला पढ़कर हमारा मन दु:खी हो जाता है। स्वर्गदूत रोए और दुष्ट आत्माओं ने खुशी से नाच किया, क्योंकि उसने यारोबाम के मार्ग में चलने और परमेश्वर के धर्म के बजाय

मनुष्य के धर्म में बने रहने का फैसला किया।

> और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, और यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे उस ने इस्राएल से करवाया था (15:34)।

हर किसी को वह निर्णय लेना होता है, जो बाशा ने लिया था। हमारा मुंह देखते हुए पसन्द हमारे सामने रहती है। कई इसे देख नहीं पाते। कई इसे एक पल के लिए देखते हैं परन्तु उन्हें और चिन्ताओं का ध्यान आ जाता है। कई पसन्द को देखते, फैसला लेते और अपने शेष जीवनों को रंगने के लिए अपने विश्लेषण को अनुमति देते हैं।

शैतान गरजते हुए शेर की तरह चलने के बजाय जब ज्योति के रूप में दूत का लिबास पहनता है तो उसे अधिक लाभ होता है। गरजते हुए शेर को पहचान कर हम उसके सामने से भाग सकते हैं। परन्तु ज्योति का मज़ाक उड़ाने वाले सुन्दर दूत के लिए हम कहते हैं, ''उसका संदेश सही होना चाहिए।'' ज्योति के दूत के रूप में शैतान धोखा देता है; गरजने वाले शेर के रूप में वह बुरी तरह से फाड़ डालता है। जब शैतान ज्योति के दूत के रूप में हमारे पास आता है, तो उसकी उपस्थिति में हम बाइबल का अध्ययन करना और यह देखना भूल जाते हैं कि परमेश्वर क्या कहता और क्या चाहता है (प्रेरितों 17:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। हम ज्योति के ऐसे दूत के पीछे मनुष्य के बनाए धर्म में अर्थात परमेश्वर की आज्ञा न मानने में जा सकते हैं।

बाशा इस दूसरे बड़े फैसले में असफल रहा। परन्तु हमारी हालत क्या है? परमेश्वर के मार्ग के सम्बन्ध में हम क्या फैसला लेंगे?

परमेश्वर के लोगों के सम्बन्ध में

बाशा का तीसरा बड़ा फैसला परमेश्वर के लोगों के बारे में फैसला था। उसने उनके साथ कैसे व्यवहार करना था। क्या उसने उन्हें मिलाने की कोशिश करनी थी या उनके साथ लड़ाई जारी रखनी थी? बाशा के शासन में यह देखने के लिए कि उसने क्या किया हमें बहुत अधिक पढ़ने की आवश्यकता नहीं है:

> और आसा और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके जीवन भर युद्ध होता रहा (15:16)।

परमेश्वर का जन परमेश्वर के लोगों से प्रेम करेगा। वह जान बूझकर शान्ति भंग करने वाला नहीं होगा। इसके विपरीत वह मेल कराने की कोशिश करता रहेगा (मत्ती 5:9)।

बाशा ने न केवल देशों के बीच दरार बनाए रखी बल्कि इसे बढ़ाने के लिए काम किया। इस तथ्य से परेशान की गम्भीर इस्राएली अर्थात यहोवा की आराधना करने वाले लोग, यरूशलेम को लौट रहे हैं, बाशा ने सीमा पर बाड़ लगा दी। उसने रामा में (15:17), जो यरूशलेम से केवल चार मील दूर स्थित नगर था, गढ़ बनाए। उसने यरूशलेम में जाने वाले उत्तर-दक्षिण यातायात पर नियन्त्रण करना चाहा। बाशा एक मज़बूत सैनिक अगुवा था और ताकत के बल पर वह यहूदा के राजा आसा के हस्तक्षेप के बिना यरूशलेम के निकट आ गया था। आसा उसे रोक पाने में नाकाम

रहा था, क्योंकि उसने परमेश्वर की सहायता नहीं मांगी थी। अन्त में परमेश्वर की इच्छा के विपरीत आसा सहायता के लिए दमिश्क के सीरियाई राजा बेन्हदद प्रथम के पास गया था। आसा ने बेन्हदद प्रथम को आकर उसके साथ लड़ने के लिए चांदी और सोना दिया। उसके आने से आसा को राहत मिली। इय्योन, दान आबेल्वेत्माका और प्रमुख नगरों पर सीरियाई राजा ने कब्जा कर लिया।

बेन्हदद प्रथम की इन सैनिक सफलताओं के कारण बाशा रामा से चला गया। ऐसा लगता है कि बाशा ने रामा पर कब्जा करने और विश्वास त्यागने वालों के यरूशलेम जाने पर रोक के और प्रयास नहीं किए। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका फैसला एक बड़े शत्रु के कारण लिया गया था न कि परमेश्वर के लोगों के मन बदलने के कारण।

वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि बाशा ने दक्षिणी राज्य के साथ कभी सुलह की इच्छा की हो। उसने मनुष्य के धर्म से विवाह किया था और उसकी वचनबद्धता का परिणाम परमेश्वर के लोगों में एकता के बजाय फूट पड़ी।

सारांश

परमेश्वर के बच्चों को तुच्छ जानने वाला चाहे कोई भी हो वह परमेश्वर की सच्ची सन्तान नहीं हो सकता। जीवन के दो बड़े फैसले परमेश्वर के धर्म और परमेश्वर के परिवार को चुनना होने चाहिए। ये फैसले अपने आप ही छोटे फैसलों के लिए मापक और दिशा दे देंगे। हमें यह पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी कि, ''रविवार को क्या करना है?'' ये छोटे फैसले उन बड़े फैसलों से निकल आएंगे, जो हम परमेश्वर के धर्म और परमेश्वर के परिवार के बारे में लेंगे।

मेरी क्लास में ऐसे छात्र थे, जो दिखने में तो बड़े समर्पित मसीही लगते थे। मेरे मन में था कि वे कहीं भी जाएं, परमेश्वर की सेवा अवश्य करेंगे। बाद के वर्षों में, मैंने उन क्षेत्रों में प्रचार किया है, जहां इनमें से कुछ छात्रों ने ग्रेजुएशन के बाद सेवा करना चुना था। आराधना में उनके न आने पर मुझे पता चला कि वे कलीसिया की आराधना में कभी आते ही नहीं हैं। मेरे लिए ऐसा उत्तर बहुत निराश करने वाला था, जो किसी भी प्रचारक के लिए होगा। अकेला कोई मसीही नहीं हो सकता। परमेश्वर की कलीसिया विश्वासी लोगों का एक समुदाय है। इसमें वे लोग हैं जो मिलकर आराधना करते, एक-दूसरे से प्रेम करते और एक-दूसरे के बोझ और आनन्द बांटते हैं।

मसीही बनने के बाद एक बड़ा फैसला परमेश्वर के लोगों के रूप में हर दिन जीने का है। कई लोग दूसरा फैसला अच्छी तरह करते हैं और कई इसे बड़ी बुरी तरह करते हैं; बाशा ने दोनों में से किसी तरह भी नहीं किया। जो लोग मसीह के लिए जीना चुनते हैं वे अपने पूरे जीवन में इस पसन्द से प्रभावित होते हैं; जो सही पसन्द नहीं चुन पाते वे उस असफलता से आहत होते और बाधित होते हैं।

इस्राएल के राजा के रूप में बाशा ने चौबीस साल राज किया। बाइबल के छात्रों से पूछें कि ''बाशा कौन था?'' तो अधिकतर केवल यही उत्तर दे सकते हैं, ''वह इस्राएल का एक राजा था।'' शायद उन्हें उसके बारे में इतना ही पता है क्योंकि उन्होंने राजाओं के नाम याद किए हैं, न कि उनके किसी आसाधरण काम को जो याद किया जाए। हां, उसे अवसर मिला था, परन्तु उसने इसे गंवा दिया क्योंकि उसने जीवन के बड़े फैसलों को नज़रअंदाज़ किया।

यह नहीं बताया गया कि बाशा मरा कैसे। हम पढ़ते हैं, ''निदान बाशा अपने पुरखाओं के संग सो गया और तिर्सा में उसे मिट्टी दी गई, ...'' (16:6)। उसका जीवन महत्वहीन था और उसकी मृत्यु में हमें कोई वास्तविक दिलचस्पी नहीं है। हर प्रमाण यही संकेत देता है कि उसने इस सच्चाई को नहीं समझा कि असली जीवन परमेश्वर के वचन, परमेश्वर के मार्ग और परमेश्वर के लोगों के बारे में बुद्धिमत्तापूर्वक लिए गए फैसलों के आधार पर बनता है। जब ये फैसले समझदारी से न लिए जाएं तो जीवन का कोई पक्का आधार नहीं होता और जीवन जल्द ही बिना सही आधार के होगा या बाद में छिन-भिन्न हो जाएगा।

सीखने के लिए सबक:
जीवन का घर सही नींव पर बनाना चाहिए।